शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 मार्च 2019
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

सम्पादकीय

अणुशक्ति अहिंसा के नजदीक

विनोबा

अणुशक्ति का उपयोग न किया जाये इतनी ही मांग अभी की जा रही है। मांग करने वालों में में बहुत्से हिंसावादी और हिंसा चाहने वाले हैं। अहिंसा को मानने वाले बहुत थोड़े हैं। अणुशस्त्रों के पहले छोटे-छोटे शस्त्रास्त्रों के लिए दुनिया में सहूलियत थी। जो महाशय अणुशस्त्रों के खिलाफ बोलते हैं, वे छोटे-छोटे शस्त्रों की मदद चाहते हैं, ताकि चंद लोग बहुत लोगों को अच्छी तरह दबा सकें। दूसरों को दबाने का यह जो शास्त्र था, वह अब टूट रहा है। इसलिए वे चाहते हैं कि अणुशस्त्र के प्रयोग बंद हों। मेरे मन की हालत इसके बिलकुल उलटी है। मैं हमेशा कहता आया हूं कि एक वर्तुल के घेरे में दो सिरे होते हैं उसी तरह एक ओर आण्विक हिंसा और दूसरी तरफ अहिंसा है। देखने में तो दोनों दूर लगते हैं पर वे एक-दूसरे के बहुत नजदीक हैं। सामान्य शस्त्र जिन्हें कन्वेन्शनल वेपन्स कहते हैं, वे अहिंसा से बहुत दूर हैं। वे अहिंसा को आने देने वाले नहीं हैं। लेकिन आण्विक शस्त्र अहिंसा के बिलकुल नजदीक हैं। वे दुनिया के सामने एक स्पष्ट चुनाव रखते हैं कि आप या तो प्रेम से रहें या सर्वनाश के लिए तैयार हो जायें। इसलिए जब से आण्विक शस्त्र आये हैं, तब से मैं बिलकुल आनंद में मग्न हूं।

बहुत लोग समझते हैं कि आण्विक शस्त्र आयेंगे तो कन्वेन्शनल वेपन्स का नहीं चलेगा। इसलिए हिंसावादी उनसे बहुत डरते हैं। वे कहते हैं कि फांसी की सजा तो रद्द नहीं होनी चाहिए, लेकिन आण्विक शस्त्र खतम होने चाहिए। हिंसावादी आण्विक शस्त्र से डर गए हैं। मैं आण्विक शस्त्रों को कहता हूं कि तुम आ जाओ जल्दी आ जाओ। वे दुनिया से कहते हैं कि अब तो तुम्हारे हाथ में ईश्वर की संहार शक्ति आ गयी है। हिंसा से नुकसान होता है और लाभ भी होता है। हिंसा मर्यादित रही तो दंडशक्ति का लाभ होता है और नुकसान भी होता है। लेकिन संहार से तो खात्मा ही होगा।

अहिंसा और एटम बम में भेद नहीं है, यह विलक्षण विचार मैं आपके सामने पेश कर रहा हूं। हरिहरा नाही भेद - पालन करने वाला विष्णु यानी अहिंसा और संहारक यानी एटम बम। संहारक शक्ति नॉन मारल (नीतिनिरपेक्ष) है इम्मोरल (अनैतिक) नहीं। वह एक शक्ति है। जैसे अग्नि नैतिक या नीतिविरोधी शक्ति नहीं, बल्कि स्वयंभू शक्ति है, वैसे ही एटम एक स्वयंभू शक्ति है। संहारक शक्ति और घातक शक्ति इनमें भेद है। पिस्तौल घातक है, संहारक नहीं। लाठी घातक है, संहारक नहीं। लेकिन एटम संहारक है, घातक नहीं। एटम बम से लाखों-करोड़ों लोग मरते हैं। वैसे भूकंप में भी मरते हैं। भूकंप घातक नहीं, संहारक है। संहारक शक्ति से डरना उचित नहीं है। अणुशस्त्र संहारक है, हिंसक नहीं। वे रुद्र हैं, लेकिन क्षुद्र नहीं। रुद्र में ये शुभ भी पैदा हो सकता है, क्योंकि मनुष्य का दिमाग सोचने लगता है। हम रुद्र शस्त्र से नहीं डरते, क्षुद्र शस्त्र से डरते हैं।

इसलिए एटम और हाइड्रोजन बम का मुझे भय नहीं लगता। उलटे, मुझे पूरा भरोसा होता है कि

अब हिंसा को मौका मिलना लाजिमी है। मैं अणुशस्त्रों का स्वागत करता हूं और उन्हें भूमि का भार कम करने वाला भगवान का अवतार मानता हूं। एटम चला तो दुनिया को अहिंसा के सिवा चारा नहीं रहेगा। या तो मानव संहार होगा, या मनुष्य अहिंसा की राह पकड़ेगा। लेकिन छोटे पैमाने पर जो हिंसा चलती है, वह प्रगति के लिए घातक है।

दूसरे लोग डरते हैं वर्ल्ड वॉर से, जागतिक युद्ध से। हम तो जागतिक युद्ध से कहते हैं कि 'तू आ जा, जितनी जल्दी आना चाहे, आ जा।' जागतिक युद्ध, मनुष्य नहीं लाता। उसे परमेश्वर लाता है। परमेश्वर जब संहार चाहता है, तब वह जागतिक युद्ध लाता है।

अब दोनों बाजू एटम बम हैं, इसलिए उनका उपयोग होने का संभव नहीं है। मुझे लगता है कि भगवान सृष्टि का संहार नहीं चाहता। अगर चाहता तो वह हमारी अक्ल कायम नहीं रखता। अगर वह संहार चाहता, तो मुझ जैसा मनुष्य अहिंसा की भाषा कैसे बोल सकता ? जब वह संहार चाहेगा, तब हरएक के दिल में क्षोभ उत्पन्न करेगा, सबको हिंसक बनायेगा और एक-दूसरे के गले कटवायेगा। लेकिन यह स्पष्ट दीखता है कि भगवान संहार नहीं चाहता। इसलिए मुझे विश्व युद्ध का डर नहीं है। 'ये जो भयानक शस्त्र हैं, उनका मुझे कुछ भी डर नहीं लगता, क्योंकि अहिंसा को उनसे कोई भय नहीं है। लेकिन अहिंसा को चाकू, छुरियां, लाठी, बंदूक इनसे भय है। - तीसरी शक्ति, विनोबा साहित्य, खण्ड 16